

सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)

अनुवाद परियोजना

(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)



अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद परियोजना

(एम.टी.टी.पी.-004)

(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.

जैसा कि आपको बताया जा चुका है कि 'सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा' (पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.) कार्यक्रम को पूरा करने के लिए आपको चार-चार क्रेडिट के छह पाठ्यक्रम तथा छह-छह क्रेडिट के दो अनुवाद परियोजना कार्य करने होंगे। इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम का चौथा (एम.टी.टी.पी.-004) और आठवाँ पाठ्यक्रम (एम.टी.टी.पी.-005) 'अनुवाद परियोजना' का है। इन सभी पाठ्यक्रमों का क्रम इस प्रकार है :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	क्रेडिट
एम.टी.टी.-001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	4
एम.टी.टी.-041 सिंधी-हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	4
एम.टी.टी.-042 सिंधी-हिंदी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद	4
एम.टी.टी.पी.-004 सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद परियोजना	6
एम.टी.टी.-043 अनुवाद सिद्धांत और सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद परंपरा	4
एम.टी.टी.-044 अनुवाद प्रक्रिया और प्रविधि : सिंधी-हिंदी-सिंधी का संदर्भ	4
एम.टी.टी.-045 हिंदी-सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद	4
एम.टी.टी.पी.-005 हिंदी-सिंधी-हिंदी अनुवाद परियोजना	6

प्रस्तुत अनुवाद परियोजना कार्य (एम.टी.टी.पी.-004) सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद से संबंधित है। इस परियोजना के अंतर्गत आपको दी गई सामग्री का हिंदी/सिंधी में अनुवाद करना है। अनुवाद के लिए सामग्री संलग्न है। इसका अनुवाद करके आपको मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करना है। ध्यान रहे कि यह 'अनुवाद परियोजना' एक स्वतंत्र पाठ्यक्रम के समकक्ष है। इसमें उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

परियोजना करने का तरीका

प्रस्तुत सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें। इससे आप समझ जाएंगे कि यह किस विषय से संबंधित है और इसमें प्रमुखतया क्या कहा गया है। इसके बाद आप इस सामग्री में से वे शब्द और मुहावरे आदि छाँटिए जिनका अर्थ अथवा जिनके हिंदी/सिंधी पर्याय आपको पता नहीं हैं। इन शब्दों को एक कागज़ पर नोट कर लीजिए। ध्यान दीजिए कि अनूद्य सामग्री के अनुवाद करते समय आपको कौन-कौन से कोश देखने की जरूरत है। विषय के अनुरूप समुचित कोशों में से उन शब्दों के पर्याय नोट कर लीजिए।

अब अनूद्य सामग्री को एक बार पुनः पढ़िए। गौर कीजिए कि अब की बार यह आपको ज्यादा अच्छी तरह समझ आती है कि नहीं। यदि कोई अंश समझ में न आ रहा हो तो उसे फिर से पढ़िए और पता लगाइए कि कठिनाई कहाँ है – शब्दों का अर्थ समझने में अथवा वाक्य-विन्यास को समझने में। यदि कोई वाक्य न समझ आ रहा हो तो उसे दूसरी बार, तीसरी बार पढ़िए।

इस सामग्री में प्रयुक्त संक्षिप्तियों पर ध्यान दीजिए। उनके पूर्ण रूप क्या हैं, जानने की कोशिश कीजिए। अधिकांश संक्षिप्तियों के पूर्ण रूप आपको इस सामग्री में ही मिल जाएंगे।

इस तरह अनूद्य सामग्री का अर्थ भली-भाँति समझ लेने के पश्चात उसका अनुवाद आरंभ कीजिए। अनुवाद करते समय भी शब्दकोश का भरपूर उपयोग कीजिए। जिन शब्दों के अर्थ आपको पता हैं उनके लिए भी शब्दकोश देखिए ताकि विषय और संदर्भ के अनुकूल पर्यायों का चयन कर सकें। वाक्य-विन्यास लक्ष्य भाषा (अर्थात् हिंदी/सिंधी) की प्रकृति के अनुसार कीजिए। यानी आपका बनाया वाक्य ऐसा लगे कि आप अनुवाद नहीं कर रहे बल्कि उस भाषा में मूल रूप में लिख रहे हैं। ऐसा तभी होगा जब आपकी वाक्य-रचना स्रोत में कही गई बात का अनुकरण न होकर लक्ष्य भाषा की कथन-शैली के अनुरूप और सहज होगी।

एक पैराग्राफ अथवा एक पृष्ठ का अनुवाद करने के बाद अपने अनुवाद को मूल सामग्री से मिलाइए और देखिए कि आपके अनुवाद का वही अर्थ निकल रहा है जो मूल कथन में कहा गया है। यदि अंतर दिखाई दे तो अपने अनुवाद में सुधार कीजिए। पूरी तरह आवशस्त होने के बाद अनुवाद को आगे बढ़ाइए। अगले पैराग्राफ/पृष्ठ के अनुवाद के बाद फिर यही जाँच-प्रक्रिया दोहराइए और अनुवाद करते जाइए।

अनुवाद पूरा करने के पश्चात उसे एक बाद फिर मूल सामग्री से मिलाइए और जाँच कीजिए कि आपका अनुवाद और मूल सामग्री समान अर्थ प्रकट करते हैं। यह भी जाँच कीजिए कि कहीं कोई पैराग्राफ, वाक्य अथवा वाक्यांश अनुवाद होने से छूट तो नहीं गया है। तत्पश्चात अनूदित सामग्री को साफ-साफ लिखकर हस्तलिखित रूप में लिखिए अथवा टंकण की व्यवस्था कीजिए।

अनुवाद परियोजना की प्रस्तुति

- अनुवाद परियोजना फुलस्केप आकार के कागज पर पर्याप्त हाशिया छोड़ते हुए एक तरफ टंकित कराके और बाइंडिंग कराके प्रस्तुत करें।
- अनूदित परियोजना के आरंभिक पृष्ठ पर आपके इस कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम कोड और शीर्षक, नामांकन संख्या, नाम, पता, अध्ययन केंद्र का कोड लिखा होना चाहिए और अंत में आपके हस्ताक्षर एवं प्रस्तुति की तिथि का इस प्रकार उल्लेख होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक : **सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)**
पाठ्यक्रम कोड : **एम.टी.टी.पी.-004**
पाठ्यक्रम का शीर्षक : **सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद परियोजना**
अध्ययन केंद्र का नाम :
नामांकन संख्या :
नाम :
पता :
.....
हस्ताक्षर :
तिथि :

- अनुवाद परियोजना के साथ एक **प्रमाण-पत्र भी लगाएँ** जिसमें आप अपने हस्ताक्षर सहित यह प्रमाणित करें कि आपने यह अनुवाद-कार्य स्वयं किया है और इसके लिए किसी व्यक्ति की सहायता नहीं ली गई है।
- **अनुवाद परियोजना विश्वविद्यालय में निम्नलिखित पते पर व्यक्तिगत रूप से/पंजीकृत डाक द्वारा भेजें :**
कुलसचिव
विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग (SED)
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068

अनुवाद परियोजना प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि

जनवरी 2025 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **30 नवंबर, 2025**
जुलाई 2025 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **30 जून, 2025**

अंतिम तिथि के बाद भेजी गई परियोजना का मूल्यांकन विलंब से होगा और आप इस अध्ययन कार्यक्रम को देर से पूरा कर सकेंगे।

कृपया ध्यान दें :

प्रस्तुत की गई अनुवाद परियोजना की एक प्रति (फोटोकॉपी) अपने पास अवश्य रख लें।

शुभकामनाओं सहित।

इस अनुवाद परियोजना कार्य के दो प्रकार के अनुच्छेद दिए गए हैं, जिनका आपको अनुवाद करके प्रस्तुत करना होगा। इनमें से 9 अनुच्छेद सिंधी भाषा में दिए गए हैं। इन अनुच्छेदों का आपको हिंदी में अनुवाद करना है। इस अनुवाद परियोजना कार्य के अंत में हिंदी का एक अनुच्छेद दिया गया है, जिसका आपको सिंधी अनुवाद करना है।

1

सिंधी अदब या साहित्य जी शुरुआति उन ज़माने खां वठी थी, जइहिं खां सिंधी बोली पंहिंजी अलगि ऐं निराली सुजाणप काइमु कई। उहो दौरु उहीँ इस्वी सदीअ जे आसिपासि आहे। उन ज़माने में मौजूदह सिंधु इलाइके जे बोलीअ में हिक तर्फि प्राकृत ऐं अपभ्रंश बोलियुनि जूं खासियतूं घटि थींदियूं वेयूं बिऐ तर्फि उचारनि ऐं व्याकरणी बीहक जे ख्याल खां अहिड़ियुनि नयुनि खासियतुनि जो विकासु थियो, जिनि सिंधु इलाइके जे बोलीअ खे, बियुनि भरवारियनि बोलियुनि (पंजाबी, गुजराती, राजस्थानी, मराठी, हिंदी वगैरह) खां हिक निराली ऐं अलहदी सजापण बि डिनी। उन ज़माने जे सिंधी बोलीअ खे 'झूनी सिंधी' सड़ियो बजे थो। वक्तु गुजिरंदे उन झूनी सिंधीअ जे रूप में बि फेरो ईदो वियो, जंहिंजूं साबितियूं असांखे पंद्रहीं-सोरहीं ईस्वी सदीअ खां वठी हासिलु थींदड़ सिंधी लिखयतुनि मां मिलनि थियूं।

सिंधी अदब जा दौर

सिंधी अदब जे विकास खे टिनि मुख्यु दौरनि में विरहायो वियो आहे — (1) अवाइली दौर : प्रेम कथाउनि ऐं वीर कथाउनि जो दौर (712 ई. खां 1520 ई. ताई); (2) विचों दौर : भगिती काव्य जो दौर (1520 ई. खां 1843 ई. ताई); ऐं (3) नओं दौर : नसुर जो दौर (1843 ई. खां हलंदड़)।

अवाइली दौर : अठीं इस्वी सदी शुरु थियण वक्ति सिंधु में ब्राह्मण घराणे जो आखिरी राजा डाहरसेनु राजु कंदो हुआ। सन् 712 ई. में मुहमद बिन कासिम जे अगुवानीअ हेठि अरबनि सिंधु ऐं मुलतान ते हमिलो करे राजा डाहरसेन खे शिकस्त डेई, इन इलाइके में अरबनि जी हुकूमत बरिपा कई। उन सां गडोगडु सिंधु में इस्लाम जो फहिलाउ शुरु थियो। अटिकल टे खनु सदियूं सिंधु ते अरबनि गवर्नरनि हुकूमत कई। उन बैदि डेही सरदारनि सूमरनि (1050 ई. खां 1350 ई.) ऐं समनि (1350-1520 ई.) सिंधु ते राजु कयो। हू असुल में हिंदू राजपूत हुआ जिनि मां पोइ घणनि इस्लाम कबूल कयो।

अरबी-फारसीअ में लिखियल तारीखुनि मां मालूम थिए थो त अठीं इस्वी सदीअ में झूनी सिंधी बोलीअ में, महाभारत जूं कुझ कथाऊं लिखियल मौजूदु हुयूं, जिनि जो पोइ अरबी ऐं फारसी बोलियुनि में तर्जुमो बि कयो वियो हुआ। इन्हनि रचिनाउनि जे हुआण जा असांखे फक्ति हवाला मिलनि था। असुलोकियूं लिखियतूं हथि अची न सधियूं आहिनि, मुमकिनु आहे त ज़माने जे लाहियुनि चाढ़ियुनि में उहे नासु थी वेयूं हुजनि।

अबाइली दौर जो जेको बि सिंधी साहित्यु रोशिनीअ में आयो आहे, उहो घणो करे ज़बानी रवायतुनि ज़रिए पीढ़ीअ-ब-पीढ़ीअ हलंदो असां ताई पहुतो आहे। उहो घणो पोइ अरिडहीं-उणवीही ईस्वी सदीअ खां वठी लिखियत में कलमबंदि कयो वियो आहे। इन किस्म जे सिंधी साहित्य में प्रेम कथाऊ ऐं वीर कथाऊ घणे तइदाद में मिलियूं आहिनि। इन करे हिन ज़माने जे सिंधी अदब खे 'प्रेम कथाउनि ऐं वीर कथाउनि जो दौर' नालो डिनो वियो आहे। ससुई-पुन्हूं, सुहिणी-मेहारु, लीला-चनेसर, उमरु-मारुई, मूमल-राणो, नूरी-ज़ाम तमाची सिंधु जूं मशहूरु प्रेम कथाऊं आहिनि। दोदो-चनेसरु जो जंगनामो ऐं राइ डियाच-बीजल जी लोक कथा, मोरिड़े ऐं मांगरमछ जी लड़ाई — इहे सिंधु जे वीर कथाउनि जा कुझ मिसाल आहिनि।

हिन दौर में असां खे इस्माइली पीरनि जा 'गिनान' नाले शइर बि मिलिया आहिनि, जिनि में ज्ञान ऐं भगितीअ जी भावना मुख्यु आहे। इस्माइली पीर ऐं दरवेश ब़ारिहीं-तेरिही ईस्वी सदीअ खां वठी सिंधु में अचण लगा। हुननि सिंधु, मुल्तान ऐं गुजरात में इस्माइली पंथ जो प्रचारु कयो ऐं घणनि ई हिन्दुनि खें पंहिंजे मजहब में आंदो। ईस्वी सन 950 (विक्रम संबतु 1007) में सिंधु जे नसरपुर गोठ में उडेरलाल जो जनमु थियो, जंहिं खे झूलेलाल, अमरलालु, या लालसाई नालनि सां बि सड़ियो वेंदो आहे। हुन ठटे जे हाकिम मिरखमाह जे जुल्मनि खां सिंधु जे हिन्दुनि जी रक्षा कई ऐं सभिनी खे भाईचारे ऐं हिंदू-मुस्लिम एकता जो संदेशु डिनो। उडेरलाल जो जनमु चेटी चंड जे डीहं ते थियो, जंहिं खे हाणे सभु सिंधी-हिंदू

पंहिंजो कौमी डींहु बि करे मल्हाईदा आहिनि। उडेरालाल जी जनम साखी ऐं संदसि उस्तुतीअ. में गातल पंजिड़ा बि असुल में हिन दौर में रचिया विया, जेके जबानी रवायतुनि वसीले असां खे मिलिया आहिनि। सेव्हण जे दरवेश लाल शहबाज जे करामतुनि जा किसान, सिंधू नदीअ जे वहकिरे बदिलाइण बाबति डुंद कथाऊं ऐं मामूई फकीरनि जा चयल अगकथियुनि वारा बैत पिणि अवाइली दौर जे सिंधी साहित्य जा कुझु मिसाल आहिनि।

2

कवीअ या शाइर जे पद सां कंहिंजी बि रीस या बराबरी कान्हे। ईश्वर जे सृष्टीअ में जेकी वहे वापिरे थो, तंहिंजी सुध जेतिरी शाइर खे आहे, ओतिरी बिए कंहिंखे थी कान सघंदी। आलम ऐं फाजल माण्हूं ज्ञान सां भरपूर आहिनि, पर शाइर खे ई अन्दरिएं दृष्टीअ जो वरिसो अता थियल आहे। शाइर जो कमु न आहे प्रबोध डियणु या शयुनि ऐं जीवत बाबत ज्ञान पलिटणु। हुनजो कमु आहे जगत जी सूंहं पसणु ऐं उन सूंहं जो मजो बियनि खे चखाइणु। उहा सूंहं नाना प्रकारनि जी आहे ऐं उन्हीअ सूंहं जी कथ इसानी वटनि ऐं दुनियवी कसोटियुनि सां थियण मुश्किल आहे। हर हिक शाइर जी परख पंहिंजी पंहिंजी आहे ऐं इऐं चवण में वधाउ न थीन्दो त हरहिक शाइर पंहिंजी सूंहं पाण थो खल्के। कुदरत जे बेशुमार नजारनि, जीवन जे जजबनि ऐं ख्यालनि, कौलन ऐं करणयुनि मां वास वठी, शाइर पंहिंजे अन्दर में झाती पाए थो। बाहिर जो गोड शोर ऐं गल्गलो, संसार जा हर घड़ीअ फिरन्दड चमत्कार, शाइर जे अन्दर में हिक किस्म जो विलोडो था विझनि। जडहिं वज्द जी घड़ी थी अचे, तडहिं उहे तजुरिबा ऐं विलोडा, उहे ख्याल ऐं काल, उहे सपना ऐं मुशहिदा, उहे रंज ऐं गंज वजी तरु था वठनि ऐं मथां अछ ई अछ समुंड खे विलोडियो आहे ऐं मंझासि अमृत रस कढियो आहे।

शाइर जो शब्द, शाइर जी बोली इन्हीअ करे निराली आहे। बेहद हुस्न खे काबू करण, सागर खे कूजे में बन्द करण, अन्दर में छोलियुनि वांगुरु छलकन्दड ख्यालनि ऐं जजबनि खे पल में पधिरो करण, न हरहिक मनुष जे वित में आहे, न हर कंहिं शब्द जे। मुरली मोहन जी सदाई वजी रही आहे, शाइर उन्हीअ खे कन डिए थो। पंहिंजी बोलीअ में उहो सागियो रसु ऐं मेठाजु आणे थो। जा सूंहं गवयो पंहिंजे साज ऐं आवाज सां पल्टे थो, जा सूंहं हिक कामिल नकाश पंहिंजे चित्र द्वारा चिटे थो, जा सूंहं कारीगर ताजमहल जहिडी इमारत में जाहिर करे थो, जा सूंहं अफलातून अहिडीअ तरह थो घडे, जो जुगनि पुठियां जुग निबरी वजनि, त बि अहिडे जी अहिडी काइम रहे, सा सागी सूंहं शाइर पंहिंजे शइर में कलमबन्द थो करे। उहे शब्द आहिनि निर्बल, पर सच पच आहिनि प्रबल। जे कागज या कपिडी फाटो त चित्र किथे, जे आवाज घुटियो त गवयो किथे? जे विज किरे त इमारत या उकिरियल पत्थर किथे? पर शब्द में उहा शक्ती आहे, जा सृष्टीअ जे तोड़ ताई काइम रहन्दी, दुनिया जो कोबि ओजार शब्द जे महिमा जी दावा नथो रखे।

शाइर जो हरहिक शब्द पंहिंजे पंहिंजे कदुर सां आहे ऐं उहे शब्द सभु हिक अजीब डोरीअ में बधल रहनि था, जंहिं डोरीअ जा अलहिदा कानून आहिनि। वजन काफिया ऐं बिया अहिडा बन्धन के बाहिरां आन्दल कोन्हनि। उहे नियम आहिनि, जिनि जे पालण करे ई शइर जी डोर वटे सधिजे थी ऐं पुख्ती थिए थी। पर जो माण्हूं समुझे त फकत इन्हनि नियमनि जे करे कहिडा बि कचा फिका ख्याल शाइर जी सूरत वटंदा या लोहार को लोह सोनारे जो सोन थी पवन्दो, तंहिंखे याद रखण खपे त इलम अरुज जा काइदा सच पच कंहिं बि शाइर ते पाण खे जोरीअ नथा मढीनि। जे उन्हनि काइदनि करे शहर खे मेठाज पुखतगी नसीब थिए ऐं शाइर जी सूंहं निकिरी निर्वार थिए त वाह, न त अहिडा काइदा कहिडे कम जा? उहे मिडेई भुलियल आहिनि, जे पंहिंजे नुक्तनि ऐं नकुलनि, वीचारनि ऐं वइजनि खे काफिये ऐं वजन जे कैद में काबू करे शाइरीअ जो दमु था हणनि। उन्हनि खे वाजिव आहे त शइर जो लिबास फिटो करे, नसुर जो जामो ओढीनि, जंहिं मां संदनि मतिलबु त घटि में घटि सिधु थिए। हिक अंग्रेजी शाइर सचु चयो आहे त 'शइर जी माना आहे चीदनि लपजनि खे चीदी सूरत में आणणु।

3

जमाने जे गर्दिश प्राचीन देशनि ऐं कौमुनि जो नालो निशान मिटाए छडियो; खाली असीं ई रहिजी वियासीं, जिनिजो रंग ऐं ढंग, वेस ऐं लिबास, सभ्यता ऐं धर्म काइम आहिनि। कदीम रोम ऐं यूनान, ईरान

ऐं बैबीलान, मिस्र ऐं कारथेज शाही सलतनतूं ऐं ऑलीशान जातियूं, सभु जमीन दोज आहिनि। उहे पत्थर ऐं कुबा बीठा आहिनि, उन्हनि सागियुनि बनियुनि में हर आहिनि, झुगा आहिनि, माण्डुनि जो गोड ऐं शोर आहे, पर उहो रुह कोन्हे, उहो जोहर कोन्हे, उहा असलियत कान्हे; हाणोकनि ऐं अगियनि जे विच में माइटी कान्हे, सम्बन्ध कोन्हे, निस्बत कान्हे, पर कंगाल हिन्दुस्तान, निर्बल हिन्दुस्तान, दबियल हिन्दुस्तान, सभिनी प्रकारें हजारे वहरियनि जी अगीं चमक ऐं तेज वारे हिन्दुस्तान जी छाया आहे, छिडो रूप आहे, हूबहू सूरत आहे। उहो सागियो ज्ञान, सागियो धर्म, सागी जाती मौजूदु आहिनि :

यूनान व मिस्र व रोम सभ मिट गए जहान से,
अब तक मगर है बाकी नाम व निशान हमारा,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे ज़मान हमारा।

हिन्दुस्तानियुनि जे अन्दरि उहा कहिडी शक्ती समायल आहे, हिन्दुस्तानियुनि जे अन्दरि कहिडो मंत्र फूकियल आहे, जंहीं करे हीउ देश ऐं कौम मरी मरी वि उथनि था, ऐं न मर्ज न हीणाई, न बुख न बाहि, उन्हनि खे लेटाए था सघनि? कहिडो आहे हिन्दुस्तान जो पैगाम जंहींजो आवाज सारे जगत में गूँजिजी रहियो आहे? को सबबि त हुन्दो जो अमर ज्योतीअ जो वरु असांखे ई मिलियल आहे! यूरोप ऐं अमेरिका अजा काल्ह निंड मां उथिया ऐं मची मुडिस थिया। संदनि कारीगरी ऐं संदनि विज्ञान अजीब लाट कढी पर आसार जाहिरु आहिनि त पुजाणी परे न आहे। हिक ई हातक जंग लगे त यूरोप ऐं अमेरिका जी सभ्यता ई शायदि सडी भस्म थी वजे। अहिडनि पंजनि सवनि या हजारनि वहरियनि जूं सभ्यताऊं ऐं सलतनतूं अनेक आयूं, अनेक वयूं। पर हिन्द जो तवारीखी जमाने खां घणो अगु ज्ञान निकितो ऐं फहिलियो, सो कीअं काल जे चम्बे मां छुटी निकितो?

इएं न आहे त बियनि मुल्कनि ऐं बियनि जातियुनि पंहींजो पंहिजो नारो न हंयो आहे, पंहींजो पंहींजो पैगामु न सुणायो आहे, पंहींजो पंहींजो जल्पो न माणियो आहे; उन्हनि खे बि फखुरु जे घडीअ जी हासिलात पे थी आहे। यूनान गयो गुजरियो पर सूंहं जो सबकु सेखारे वियो। रोम मिटिजी वियो पर रोम जो काइदो ऐं कवाइद, इतजाम ऐं जोडजक, जहान में प्रसिद्ध आहिनि। मिस्र वियो पर संदसि जादू न वियो। अरब उहो अरब न रहियो पर अरब जो तोहीद वारो पैगामु अजा बुलंदु आहे। अंग्रेज हलिया बिया, पर अंग्रेजनि जी सौदागरी कंहीं खां विसरंदी? जपान जी अवरचाई ऐं खुश खल्की, चीन जी लिताफत ऐं हथ जे हुनर, होश ऐं सहनशीलता जो वेरी बि दाद डींदा।

मतिलबु त हर कंहीं कौम पंहींजो पंहिजो यादगार अडियो आहे, हर कंहीं देश खे फखुर जो सबबु पिए रहियो आहे। यहूदी कौम थिर थांउ न पातो, पर त बि पाणखे ईश्वर जो बोदलो कोटाईदी आहे। यूनानी सभिनी धारियनि खे गेंवार जे नाले सडींदा हुआ, त रोम वारा त तहां मगरूर हुआ। चीनी पंहींजे मुल्क खे अर्श करे पुकारींदा हुआ त यूरोपी कौमूं को घटि कीन पयूं। इन्हीअ रीति जे हिंद वारनि पाण खे वडो लकबु डिनो ऐं पंहींजनि पुस्तकनि में ठहिरायो त देवताऊं बि हिन्द में जमण लाइ सिकंदा आहिनि, त का खता कान कयाऊं। जाती ऐं देस जो फखुर स्वाभावीक आहे ऐं जरूरी बि आहे। उहो इंसान लानती जीव आहे, जंहींखे पंहींजे वतन जी खाक बि बियनि हंधनि जे सोन खां सर्स नथी लगे। अहिडे मरदूद जी पदवी ऐं पैसा, शान ऐं शौकत, ज्ञान ऐं विज्ञान, व्यर्थ ऐं असमर्थ आहिनि, हिन्द वारनि खे त फखुर लाइ काफी ऐं कवी सबब बि आहिनि। इहोई हिक देश आहे, जंहींजी दावा आहे त संदसि पैगामु अमरु आहे, संदसि जोहर मिटिजण जो न आहे। बिया देश पंहींजो पंहींजो नगाडो वजाए कूच करे विया, के कूच, करण वारा आहिनि, हिन्द वारनि जो खीमो सदाई लगल आहे।

4

साहित्य जहिडो यादगार ऐं इंसान जात जो राखो बियो कोन थी सघंदो। दारा ऐं सिकन्दर, विक्रम ऐं नौशेरवान जहिडनि शाहनि जो, पहलवाननि जो ऐं कारीगरनि जो; पर खुदि अवतारी पुरुषनि जो, को यादगार खडो करे सधिजे थो त रुगो साहित्य जे वसीले। सरीर मिटी थी वियो, खून सुकी वियो, प्राण वायूअ सां मिली वियो, माण्डूअ जो कुझु न बचियो रहियो, पर साहित्य जे वरकनि में दिमाग ऐं दिल, सरीर ऐं आत्मा जो तंत माल इएं उपिजियो, इएं वधियो, इएं सुगंधितु थियो, जो गुलस्तान में मिटीअ ऐं पाणीअ; पथरनि ऐं भाण, माण गुलाब जो टिडी बीहन्दो आहे ऐं सभिनी डिसाउनि में खुशू फहिलाईदो आहे।

साहित्य – मूडी या सोनी मूडी न रुगो इंसान जात जी पकी यादगार ऐं बचाव आहे पर हिकु उहो ब्रिज आहे, जितां वसीअ नजर फेराए सघिजे ऐं इंसान जात जे उनतीअ ऐं स्थितीअ जी पडताल करे सघिजे। जे कहिं बि कौम या देश जो दर्जो जाचिणो आहे, नम्बर डियणो आहे त पहिरीं संदसि साहित्य मूडीअ जी कथ करणु वाजिबु आहे। इंग्लैण्ड बरखु थियो त शेक्सपीअर जहिडो साहित्यकार उन्हीअ देश में जन्मियो, रूस 'रिछ' मां माण्हूं थियो त टालस्टाइ पारो लेखक रूस में उत्पन थियो। आइरलैण्ड जे कौम खे अंग्रेज अहिडी बुछां नजर सां डिसन्दा हुआ जो अंग्रेजी बोलीअ में जेकडहिं चइजे त कहिंखे लत हणी कडीसीं त चवण में आयो त फलाणे खे आइरश इजाफो मिलियो आहे, जे को गोल्हण में चुक करे त चइजे त आइरश डांद आखियो आहे! पर जडहिंकर आइरलैण्ड में प्रसिद्ध कवि ऐं ग्रंथकार पैदा थिया, तडहिंकर अंग्रेज बि चुप में रहिया आहिनि ऐं आइरलैण्ड जे माणहुनि खे माण्हूं करे लेखण लगा आहिनि। बंगाली बाबूअ जो खिताब तेसींताई चिड डींदड ऐं हिकारत भरियल हो, जेसीं बाबू रविन्द्रनाथ टैगोर जे गीतांजली पुस्तक साहित्य जे मैदान में चहिरो न डेखारियो हो।

असां सिंधियुनि खे बि जे पंहिंजो जौहर डेखारिणो आहे, सिंधियत खे काइमु रखिणो आहे ऐं हिंद में धाको जमाइणो आहे त हिन सोनी मूडीअ खे सांढणु खपे ऐं उन्हीअ में इजाफो करणु खपे। शिकस्त दिलि थी पंहिंजी सिंधी साहित्य खे फिटी करे छडणु न खपे। बराबर साहित्य जे क्षेत्र में को वेरी कोन्हे, स्वदेशी ऐं विदेशी जो फर्कु कोन्हे ऐं हरकहिं जे बोलीऊ जो साहित्य असांखे चाह सां पढणु खपे ऐं दिल सां हंडाइणु खपे। रुगो इहे वीचारु करणु खपेऊं त अंग्रेजी ऐं फेंच, रूस ऐं जर्मन या हिन्दी ऐं बंगाली साहित्य जे मूडीअ जो लाभ वठी नेटि सिंधी साहित्य खे मालामाल करिणो आहे। साहित्य जो सचो अधिकारी उहो शख्सु आहे, जो पराए जी सोनी मूडी तके नथो, नकी धिकारे थो, जो उन्हीअ मूडीअ खे कमु आणे थो, उन्हीअ गुल मां रसु वठे थो, उन्हीअ चश्मे मां प्यास बुझाए थो, नेटि जहिं जातीअ में जनमु वरितो अथसि, जहिं बोलीअ खे माउ जी थनु सां गडोगडु पीतो अथसि, तंहिं जातीअ तंहिं बोलीअ खे सोनी मूडी वरिसे में डिनी वजे थो।

5

भूमीअ भूमीअ जी महिमा पंहिंजी पंहिंजी आहे, मुल्क मुल्क जो महात्म मुख्तलिफ आहे। शिवजीअ जो आस्थान कैलाश ते ई थींदो, परियुनि जे आखाडे लाइ कोह काफ ई सुहंदो। नदियूं मिडेई नदियूं, ढंढूं मिडेई ढंढूं, पर हर की पौड़ीअ वटि गंगा जल सां बियो कहिडो जल बरमेचींदो, मानसरोवर सां कहिडी झील कुल्हो हणंदी? यूरोप जे जंग जो क्षेत्र हर हर फलइंडरस ते थींदो ऐं हिंदुस्तान जे किस्मत जो फैसिलो वरी वरी कुरुक्षेत्र ऐं थानेसर, पाणीपट ऐं करनाल वटि थींदो। काशीअ जा पण्डित भलि अकाबर हुजनि पर आचार्य वरी बि डखण जा, अगे शंकर ऐं रामानुज, हीअर रामन ऐं राधाकिशन – चित्र चिटींदा चीनी ऐं रोमी, पोख पैदाइश में सर्स थीन्दा जावा ऐं स्वरण भूमी। खुशि खल्क ऐं खुशी जीअरा लभंदा फ्रांस ऐं ईरान में त कारीगर जर्मनी ऐं जपान में। वापारी त इंग्लैण्ड ऐं अमरीका, एकांत ऐं एकता जो आलाप त सिंधूअ जी वादी।

इए बराबर आहे त समे जे प्रभाव करे, प्रकृतीअ जे उथल-पुथल करे कहिं भूमीअ जो तेजु कडहिं घटि कहिं वधि थो रहे। असांजे अखियुनि अगियां इंग्लैण्ड जे चमकन्दड तेज ते ग्रहण जी छाया पइजी रही आहे ऐं दुहिल-दमामा, दान-पुज, जाखोडा जतन, अजा त इन्हीअ ग्रहण खे मिटाइण में असमर्थ साबित थिया आहिनि। समुण्ड जो दादलो बोदलो इंग्लैण्ड, कौमुनि जो नकु, मुल्कनि जो मर्कजु, हिन नए हवाई युग में फिरी रहियो आहे कुण्ड कुडि में धिकियलु, बियनि जो मोहताजु ऐं खौफ जो मारियलु। जाग्राफीअ जे पेच में का भूमी पेई त केरु छडाएसि?

असांजी सिंधुडी बि अयामनि खां समे जो शिकार थींदी रही आहे, जाग्राफीअ जे पेच में पियल आहे। जीअं सिंधु पंहिंजो वहिकिरो फेराए, तीअं सिंधूअ जी वादी या माथुरी, याने असांजी भूमी सिंधु बि पेई फिरे। सिंधु जो जेसीं हिंद सां गहिरो तालुक रहे, तेसीं खुशि रहे, खुशहाल रहे, उहो नाडो कपियो त वरी मुअनि जो दडो बणिजे। सिन्धु नालो डिनो हिंद खे, सिंधु सेखारियो वेदनि जो मूल मन्त्र 'वहदत मां कसिरत थी, कसिरत वहदत कुल', पर सिंधु जी भूमीअ खे सुख सुम्हण नसीब में न आहे। हिन्दुस्तान जे बियनि प्रांतनि में यादगार थियनि जमीन जे मथां ऐं ऊचे गाट, सिंधु भूमीअ जा यादगार थियनि जमीन हेठां ऐं दडनि जे सूरत में। बियनि हंधि लभंदा अशोक जा थम्मा ऐं मुगलनि जा महल, राजपूतनि जा कोट ऐं जवाहरनि जा झंझयल मन्दर, सिंधु में लभंदा मुअन (मोहन) जा दडा, दलूराइ जूं जमीन दोज

नगिरियूं, अरोड़ जा खंडहर, भंभोर जूं भिटूं – शायद को जमानो अचे त सिंधी लोक दरयाह जे लट पियल पेट में खोटाई कंदे साध बेले मंदर जूं मूर्तियूं ऐं संगमरमर डिंसी सुसि-पुसि कनि त हिते बि के संगमरमर जा टुकर हुआ छा, जे कहिं भूकंप या कुदरती कहर सबबि गुम थी विया! असां जे सिंधूअ जे गर्दिशूं डिठियूं आहिनि ऐं डुफेर, से बिए कहिं दरयाह जे भाग में न हूदा। न नील न फरात न अमो दरयाह अहिडियूं माजिराऊ डिठियूं गंगाऊं ऐं गोदावरियूं त कल्ह जावल किकियूं ई सडिबियूं।

6

महात्मा गांधी इब्राहिम लिंकन वांगियां प्रेजीडन्ट कोन हो, मुल्क जे लश्कर जो महन्दार न हो, न की अहदनामा ऐं इकरार खेसि सही करिणा पिया। उहे सभु कम बियनि खे थे करिणा पिया ऐं महात्मा वाजिब न जातो त सभिनी खे रेटे पंहिंजी हले। या शायदि हुन समुझियो त कुटंब में ब भाउर ठही न सघनि ऐं हुननि जी तुरशी वधी वजे त हुननि खे धार थियण में रोक न विझण खपे। की बि हुजे, देस जे अबे जे वेठे वेठे मुल्क आजाद थियो ऐं उन्हीअ ई मुल्क जा ब टुकर थिया। पर उन्हीअ आजादीअ ऐं बंटवारे सां देवीअ जो टियों रूप बि प्रघट थियो। हर कहिं मूर्तीअ में त्रिमूर्ती समायल आहे ई आहे। उहो रूप हो भयंकर रूप, जंहिंखे काल जो चक्र चइजे। उन्हीअ चक्र में अनेक हिन्दुस्तानी मारिजी विया, बेवाहनि ऐं यतीमनि जूं रडियूं आसमान ताई पहुतियूं, सुहागणियुनि जा सुहाग लुटिया विया, लखें माण्हूं दर बदर थिया। तइसब ऐं वेर, लोभ ऐं विभचार जी अग्नि भड़िकी उथी। इऐं थे भायों त हिन अग्नीअ में शायदि सजो मुल्क याने बई टुकरा भस्म थी वजनि। उन्हीअ आपदा जे समे बुढे बापूअ पंहिंजी जीवत जो जोहरु डेखारियो ऐं उन्हनि जो कंधु हेठि कयो, जे हुनखे ममीअ वांगुरु समुझी वेठा हुआ, पंहिंजी या पंहिंजे पाड़ेसरीअ जी पुठी ठपेरे रहिया हुआ त डिंसु असीं कहिडा न राजनीतीअ में भडु आहियूं ऐं जमाने जा उस्ताद आहियूं। बुढे बापूअ उन्हीअ लंगोट में, उन्हीअ हिक लकड़ीअ जे टेक ते बरियल भंभट जे भर में पाण पहुचायो ऐं सिर तिरीअ ते खणी देहली ऐं कलकत्ते, नोआखलीअ ऐं बइरेसाल जे शरणार्थियुनि खे शर्मायो ऐं दरदरयुनि ऐं मुजलूमनि खे वाहर कई। दुनिया जे तवारीख में बियो अहिडो मिसाल कोन्हे जो लुचनि ऐं लफंगनि, खूनियुनि ऐं कुकर्मियनि, विष्टा ऐं विभचार भरियल दैइतनि खे हिक इंसान एतिरे कदुरु पंहिंजे सत्य ऐं अहिंसा सां, पवित्र जीवत ऐं लासानी आत्मिक बल सां, दया ऐं करुणा सां, सऐं दगि लातो हुजे ऐं संदनि बरियल सडियल हृदनि ते थधो छंडो विधो हुजे। चवनि था त जनवरी 1948 में संदनि सजो ख्यालु हो सिंधु ऐं सिंधियुनि डांहुं, जिनि खे 6 जनवरी फर ऐं कोस जो शिकार बनायो वियो हो ऐं जिलावतनीअ लाइ लाचार कयो वियो हो ऐं जे अजा डींहं हुजनि हा त सिंध में चरण घुमाए हा ऐं सिंधियुनि जी शेवा पाण ते हमवार करे हा।

कुदरत खे कुझु बियो वणियो। अमेरीका जे अबे इब्राहिम लिंकन जो खात्मा थियो हिक पागल हथां, जंहिं सजे मुल्क में रोज राडो पैदा करे छडियो, त असांजे देस जे अबे जो बि अंतु हिक मूढल मनुष्य हथां, ऐं उन्हनि बिन्ही महापुरुषनि जिनि खे ई फकति देस जे अबे जो खिताब मिलियो आहे। पंहिंजे कोशशनि ऐं कुर्बानियुनि जो फलु न चखियो, विश्राम न पाताऊं। तंहिं में बि मालिक जो मतिलबु हूंदो। संदसि हिंसक मृत्यु करे उहो असरु पैदा थियो जो सऐं सिधे मौत जे करे न पैदा थिए हा, संदसि ओचितो गाइब थी वजण करे देस खे उहो धधिको आयो, जंहिं बिना हिंदु वासियुनि जा कपाट न खुलनि हा। संदसि बाहिरीं जोत जे उझामण खां सवाइ शायदि उहा जोत न जागी सघे हा, जंहिंजे तातण करे संदसि मुकररु कयल वारिस, जवाहरलाल, अजु बि वेदू दुनिया खे सुलह जो रस्तो बताए रहियो आहे ऐं देशवासियुनि खे जातीपणे जे ओढ़ाह में किरण खां बचाए रहियो आहे।

7

मुल्क जे विरिहाडे पुजाणा सिंधियुनि जी कठिनु परीखिया थी आहे। मुंहिंजे लेखे घणे भाडे इन परीखिया मां लंघंदा पारि पवंदा वजनि था। इन आजमाइश जी आग मां सभु सलामत कीन था पहुचनि। के लहिसिजी वजनि था। छिडा भस्म बि थी बजनि था। सेकु त सभ खे लगे थो, पर अंत में संदनि नैतिक शक्ती सिंधियुनि खे ऊचनि आदर्शनि जी मंजिल डे छिकीदी वजे थी।

इहो सुभावीकु आहे। सिंधियुनि जे इतिहास जा थोरा ई के, किनि कमजोरियुनि जो बयानु था डियनि, त घणेई बिया संदनि नैतिकु बल जी साख था भरीनि। पुराणे इतिहास जी हिति मां गाल्हि कोन थो करणु

धुरां। इहो त अजा मोअनि जे दडे ऐं सिंधु जे बियनि खंडहरनि जे पट मां पुनर्जन्म पियो वटे। धीरे-धीरे संदसि छठी पेई लिखिजे। नकी की अरबनि जी काह वक्ति सिंधु जी राणी लाडी देवीअ जी सूरिहियाईअ डे इशारो थो करियां। राणीअ राजा जे कल्ल थियण बैदि पंहिजा सभु जर जेवर विकिणी नई सेना तयारु करे अरबनि सां युध जारी रखी। आगाटे हिंदुस्तान जी तारीख में जौहर जे पहरेण मिसाल जो वर्णनु थो करणु घुरां, जडहिं युध में हाराइण पुजाणा राणी लाडीदेवी ऐं राजाई कुल जे सभिनी जालुनि महल जी हिक कोठीअ अंदर पाण खे बंदि करे पंहिजनि हथनि सां पाण खे आग डेई अरबनि खां पाणु बचायो। आम सती प्रथा में ऐं राणी लाडीअ जे अरबनि खां पाणु बचाइण लाइ जौहरु करण में वडो फर्कु आहे!

कल्होड़नि, मीरनि, अंग्रेजनि जे जमाने जी गाल्हि आहे। डूर डेसावरनि में वजी, अजीब-व-गरीबु कौमुनि जे विच में रही, अणजातल बोलियुनि जे अधीन थी, अनेकु डुखियाइनि खे मुंहं डेई, कहिं पद ते पाण खे पहुचायाऊं। किथे शिकारपुर ऐं किथे ओलह चीन ऐं रूस जा डाखिणा शहर। उन्हनि शहरनि जा एविजी अजु रूसी सिफारतुनि सां हवाईजहाजनि वसीले हिक डीहं में हिति रसी हिंदुस्तानु डिसण था अचनि। सदियूं अगु शिकारपुर जे वापारियुनि जूं मथियनि डूरांहनि हंधनि ते कोठियूं खुलियल हयूं। महिननि जूं मुसाफिरियूं हयूं। वाटूं औझडु, हर पहाड़ पुठियां, वणनि जे हर झुगिटे में रहजननि जो खौफु लिकलु हो। न जानि, न पैसो सलामत हो। छा त उन्हनि डीहंनि जे सिंधियुनि जी हिमथ हूंदी, छा त संदनि साहसु हूंदो जो अहिड़नि खतिरनि मां बेडपो लंघे, अहिड़ियुनि अणवणंदड हालतुनि हेठि रहंदे, पंहिजी बुर्दबारीअ, सचाईअ, ईमानदारीअ जे गुणनि जी शक्तीअ द्वारां, सदियूं अगु हुननि जणु एशिया खंड जी हिक जबरदस्तु बैंक स्थापितु कई। हिंदुस्तान ऐं रूस जो वापार सिंधी सराफिकी बैंक जे इन्हनि शाखुनि वसीले हलंदो हो। जडहिं अंग्रेज अजा वापारिके वेस में हिंदुस्तान, अफगानिस्तान, बलोचिस्तान ऐं रूस घुमंदा हुआ, तडहिं सिंध जे सराफनि जूं हुंडियूं ई संदनि हथियो हयूं। उहे सिंधी उन्हनि डेसावरनि में कोठियूं खोले न वेठा हुजनि हा, न हुननि ऐं बियनि विच एशियाई मुल्कनि जी पाण में बि छिडी का वाट हुजे हा।

8

अंदर में उमंगु उथियो। उमंग सां कल्पना उत्पनु थी ऐं कल्पना रूपु वरितो। उन्हीअ रूप खे कोठियाऊं कला। कला आहे गुणु ऐं गुणवानु आहे कलावानु ऐं गुण खे प्रघटु करे बियनि जे अगियां पेश करण वारो आहे कलाकारु। कहिंजे अंदर में हूक उथी ऐं उन्हीअ हूक अखरनि जी सूरत वरिती ऐं सुंदरु वीचार सुंदरु भाषा में जाहिरु थिया त थी पेई कविता। कहिं आत्मिक प्रकाश खे सुर, गीत ऐं लइ में आंदो त थी पियो संगीतु। संगीत जो इजिहारु किनि कयो मुख मां त किनि कयो हथनि सां। हथनि कमु कयो से साज बणिया ऐं साज सुरिया, मुख कमु कयो त भांति भांति जा राग जुडिया। सुर जे धुन में अची जिनि मस्तीअ में फेरियूं पातियूं ऐं हथनि ख्वाहु पेरनि सां तालु वरितो तिनि अनोखी कला पैदा कई जंहिं खे कोठियाऊं नृतु, नाचु या रक्सु। पथरनि खे तराश करण जे कला खे कोठियाऊं संगतराश, त लीकुनि खे रूप रंगु डियण वारी कला खे कोठियाऊं चित्रकारी। कला जी उपमा शास्त्रनि में थियल आहे। कला दातार जी देन आहे। कला उन्हीअ खे मिलंदी आहे जंहिं ते सरस्वती देवी जी कृपा थींदी आहे। कला सां झलक मिले थी कौम या मुल्क जे कल्चर जी। कल्चर अंग्रेजी अखरु आहे। तंहिजी माना अरबीअ में आहे सकाफत ऐं संस्कृत में आहे संस्कृती। तहजीब, तमदुन ऐं सभ्यता जी सही माना अलगि आहे।

मुल्क में संस्कृतीअ जो प्रदर्शनु पूरीअ रीति कलाकारु कराए सघे थो। इहो ई कारण आहे जो जडहिं बि को देशु चाहे थो त बियनि देशनि खे असां जे संस्कृतीअ जो पतो पवे तडहिं कलाकारनि खे ई उहो कम सुपुर्दु कयो थो वजे ऐं उहे कलाकार पूरीअ माना में देश जा एलिची बणिजी पंहिजे कला द्वारा पंहिजे मुल्क जो मानु मथे था कनि।

मुल्क जूं झुनियूं रीतियूं रस्मूं कहिड़ियूं आहिनि, देश जा किसान कहाणियूं कहिड़े बनावत ते बीठल आहिनि, कौम जो अदबु कहिड़े मयार जो आहे, जनता जा अकीदा ऐं विश्वास कहिड़ा आहिनि, जनता जे राग यानी मौसीकी, संगीत में लुताफत शामिलु आहे, माण्डुनि जी पोशाक कहिड़ी आहे। संदनि हार सींगार जो सामान कहिड़ो आहे, संदनि खाधो पीतो कहिड़ो आहे, हुननि जी रहिणी कहिणी कहिड़ी आहे वगैरह वगैरह। इन्हनि सभिनी गाल्हियुनि ते कलाकारु स्थूल या सूख्यमु कला द्वारां रोशिनी विझी पंहिजे देश जे सभ्यता, संस्कृतीअ ते रोशिनी विझे थो। इस्थूल कला खे कोठीनि उपयोगी कला या मादी फनु ऐं सूख्यमु कला खे कोठीनि ललित कला या लतीफ फनु। स्थूल कला में जाहिरी तौर दुनियवी

खजाननि ऐं पंहिजे सरीर खे सुखनि जो मालु मौजूदु हूंदो आहे ऐं सूख्यमु कला में समायल हूंदी आहे आत्मिक आनंद जी सामग्री। कला जो दर्जा ऊचो आहे। जीवन में सुंदरता खे चिटीअ तरह कला ई चिटे थी, हर देश खे पंहिजी तहजीब ते नाजु आहे.

9

पर जे इऐं आहे ऐं जमूं था इन्हीअ लाइ त मरूं, जे बकाउ कंहिं गाल्हि ते कोन्हे, त पोइ खुशीअ जो नालो बि दुनिया मां निकिरी छोन थो वजे? कहिडी गाल्हि आहे जंहिकरे जमाने जे गर्दिश हेठि झुकियल इंसान बि मथो मथे खणी थो घुमे ऐं मौत जे डप ऐं हिरास में फाथलु जीवु बि हले चले पियो ऐं रखी रखी मुश्के कुश्के बि थो? को त थम्भो मिडेई आहे जो आदि खां वठी जीवत खे झले संओं करे बीहारे रहियो आहे ।

ओ, तूं जो रातियूं जागी कशाला कढी महिनत करे रहियो आहीं, किताबनि ते नूर निचोए रहियो आहीं, सो छाजे कारण? ए लेखक, तूं जो सूर सख्तियूं सही, फाका कढी, उहो ग्रंथु रचे रहियो आहीं, जंहिजे छपिजण ऐं पधिरें थियण में केतिरी दिकत थींदइ, सो छा जे लाइ? ओ नकाश, कहिडे सबिबां उहा तस्वीर लीक लीक करे चिटे रहियो आहीं? ए मालही, तूं उहो वणु पोखे रहियो आहीं ऐं थधियूं कोसियूं सही रहियो आहीं, सो छा जे कारण? ओ भगत, जंहिं प्रभूअ खे डिठो बि कोन अथई, नको कंहिं बिए डिठो आहे, तंहिंजे अगियां गोड़ा खोड़े जो आराधना करे रहियो आहीं, सो कहिडे लेखे? ओ बेवह, तूं जो दर दर पिनी, पराओ पोरिह्यो करे, उन्हीअ यतीम बालक खे स्कूल में कॉलेज में पाढ़े रहियो आहीं, सो छाजे करे? ओ जर्मन उस्ताद, तूं कहिडे आधार ते पंहिंजी सहिणी सफीअ जे कवर ते चई रहियो आहीं त हिन दुनिया जा छिनल गुल वजी बिए हंधि हार में पोइबा? ए बंगाली शाइर, तूं छो थो चई त जीवत जूं मुखिडियूं मौत जे मिटे मीहं करे ताजियूं रहदियूं?

ए सभिनी पदार्थनि जी मट, अकेले सिर जीयारीन्दइ बूटी, जम ऐं मौत जी उताहीं तुंहिंजे चोटीअ सां कीअ कुल्हो हणंदी? ही समुण्ड ऐं बिए दुनिया जो सागर तुंहिंजे तरे ताई कीअ रसदा? तो कोलंबस खे समुंड पार मोकिले नई दुनिया प्रघट कई, तूं ई इंसानी जीवत जो थम्भो आहीं। तूं उहा शफक आहीं, जंहिंखे आगाटा इंसान सुर्ग जी डाकणि समुझंदा हुआ, तंहिं करे ई इंसान चई सघे थो त हिक भेरो डिठो अथमि ऐं हिक भेरो ख्वाब लधो अथमि, वरी डिसंदुसि, वरी पसंदुसि। हिन मिथ्या जगत में तूं ई मिथ्या न आहीं। हिन संसार में जिते हरका मिठी शइ नेठि कौड़ी आहे, जिते कोबि पंहिंजो कोन्हे, जिते वफाईअ जा कौल बीहनि नथा, जिते जप तप व्यर्थु था वजनि, तिते तूं ई आधार, वसीलो ऐं थम्भो आहीं।

उहो ईश्वरु जंहिं में डिसण खां सवाइ वेसाह था रखूं ऐं रखिणो थो पवे, जो समझूं था त मारे थो त सहण जी ताकत बि डिए थो, उहो सुर्ग जो जाहिरी कहिंखे मिलियो त कोन्हे, पर सभ कंहिं जे अखियुनि अगियां डेखारी डिए थो, उहो ख्यालु त असांजी नीजारी बेजारी, असां जूं आहूं ऐं आसूं मिडेई हणी हंधि कंदा, उहे सभु तुंहिंजे करामत करे असांखे डढ डियनि था । तुंहिंजे करे जीवत जे कड़ाईअ में मेठाज अचे थो, प्रेम ज्ञान जा चश्मा जारी थियनि था, कुर्बानीअ जा कारनामा ऐं इश्क जा उला लाट कढनि था। ओ इंसानी जीवत जा आधार थम्भा – उमेद या आशा! शाल तूं कंहिंखे न छडीं! शाल तुंहिंजो सायो सभिनी दरदरियुनि ते हुजे, त दुखियुनि दिलियुनि में पारसीअ वाणीअ जो पड़ाओ बुधण में अचे :

ए दिल सबूर बाश मखूर गम क आकबात

ऐन शाम सुबह गरदद ऐन शब सहर शोद

(ए दिल! सबुर करि, दुख खे न चबाड़, छाकाणि त नेठि हिन शाम पुठियां सुबहु ईदो ऐं हीअ राति फिरी प्रभातु थींदी।)

हिंदी के निम्नलिखित अनुच्छेद का सिंधी भाषा में अनुवाद कीजिए:

10

सिंधी में लिखे जाने वाले बाल साहित्य में ज्यादातर रचनाएँ बाल गीत और बाल कहानी की मिलती हैं। स्वतंत्रता के पूर्व सिंधी साहित्य के स्तंभ कहे जाने वाले प्रसिद्ध साहित्यकारों तथा

विद्वानों ने कहानियाँ भी लिखी थीं, परन्तु उनमें से अधिकतर कहानियाँ बोधप्रद होती थीं। लेकिन स्वतंत्रता के बाद बाल कहानी को नया मोड़ मिला है। वैसे कुछ लेखक अब भी लोककथाओं का तथा लोककथाओं पर आधारित कहानियों का लेखन करते हैं। फिर भी, समय के अनुसार लिखी जाने वाली और आधुनिक संदर्भ वाली सुंदर कहानियों की सिंधी में कमी नहीं है। सिंधी में वास्तविक जगत के परिवेश वाली कथाएँ भी उपलब्ध हैं तो विज्ञान संबंधी कथाएँ भी, भले कम ही सही, उपलब्ध अवश्य हैं।

मौलिक बाल कहानियों का पहला संग्रह 'डाडीअ जूं आखाणियूं' (दादी माँ की कहानियाँ) विभाजन के पूरे 14 वर्षों के बाद वर्ष 1961 में प्रकाशित हुआ। इसके लेखक जीवत गोगिया 'जोत' थे। इसी लेखक ने बाद में 'परियुन जूं आखाणियूं' (परी कथाएँ) संग्रह वर्ष 1968 में दिया। दोनों संग्रहों में बच्चों की कल्पनाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप अच्छी कहानियाँ शामिल हैं। आगे चलकर उनके और भी बाल कहानी संग्रह प्रकाशित हुए। 'नवानवे नंढिडियूं आखाणियूं' (निन्यानबे छोटी कहानियाँ — 1979), 'आखाणियूं ई आखाणियूं' (कहानियाँ ही कहानियाँ — 1981), 'रंगबिरंगी आखाणियूं' (रंगबिरंगी कहानियाँ — 1980), 'बिल्लीअ ऐं कूए जूं आखाणियूं' (बिल्ली और चूहे की कहानियाँ) वगैरह। 'आखाणियूं' का अर्थ है — बाल कहानियाँ।

अनेक विषयों पर लिखी गई जीवत गोगिया की कहानियाँ बच्चों का मनोरंजन करती हैं। वे एकमात्र बाल साहित्यकार थे, जिन्होंने केवल बाल साहित्य ही लिखा और उसमें भी केवल कहानियाँ ही लिखीं। जीवत गोगिया पशु-पक्षियों को पात्र बनाकर कहानियाँ लिखने के विशेषज्ञ थे। चूहा और बिल्ली उनके प्रिय पात्र थे।

प्रसिद्ध सिंधी कहानीकार ईशवर चन्दर ने भी बच्चों के लिए कुछ कहानियाँ लिखीं। उनका एक संग्रह 'नए ज़माने जो कूओ' (नए ज़माने का चूहा) नाम से 1979 में छपा था। उसमें उनकी केवल तीन कहानियाँ हैं। हिंदी में भी उनका एक बाल-कथा संग्रह 'एक मासूम भूल' (1987) छपा है। उनकी लगभग सभी कहानियों का मुख्य पात्र 'चंपक' नाम का छोटा चूहा है। वह आज की नई पीढ़ी का प्रतीक है और बिल्ली को तरह-तरह की युक्तियाँ लड़ाकर मात देता रहता है। उनकी लेखन शैली बहुत सुंदर, भाषा सरल और आधुनिक वातावरण के अनुरूप है।

सिंधी के सुप्रसिद्ध कवि गोवर्धन भारती के दो बाल कहानी संग्रहों — 'नई बस्ती' (1963) और 'चंड ते चढ़ाई' (चौंद पर चढ़ाई — 1991) — में दी गई कहानियाँ सरल प्रस्तुतीकरण और काव्यात्मक शैली के कारण बच्चों द्वारा पसंद की गईं। उनकी कहानियाँ 'टुंगर लोटो' (छेद वाला लोटा) बच्चों को हंसाती है तो 'रंगबिरंगी होली' जंगल के पशु-पक्षियों से मुलाकात कराती है। 'बजरंग बली' कहानी में उन्होंने खिलौनों के माध्यम से राम और रावण के युद्ध को प्रस्तुत करते हुए झूठ पर सच्चाई की जीत को प्रस्तुत किया गया।
